आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 31 January, 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा - *भट्टी के आखरी दिन संकल्प करे तपस्वी मूर्त बनने की*

इकतीस जनवरी। प्रभु मिलन का दिन। और हमारी एक मास की श्रेष्ठ सुन्दर डिवाइन भट्टी का आखरी दिन।

यूँ तो हमें निरन्तर भट्टी करते रहना है। और जो कुछ हम अनुभवों से सीखते है उसे कन्टिन्यु अवश्य करना है।

क्योंकि कोई भी चीज़ हम क्लोज़ कर देते है तो उसका ज्यादा फायदा नहीं होता। लेकिन अगर हम उसको आगे बढ़ाते रहते है तो वह चीज़ हमारे जीवन का हिस्सा बन जाता है।

इसलिए पूरा समय जो भी अच्छे अनुभव हुए हो उनमें से पाँच अनुभव अवश्य याद रखेंगे, लिखेंगे। उनको कन्टिन्यु करेंगे। हमारे पास एक दृढ़ इच्छा अवश्य होनी चाहिए कि ....

" मुझे यह करना है " ....

हमारी दृढ़ इच्छा में, हमारी पावरफूल संकल्पों में बहुत बल है। हम देखते है लोगों को। कइयों ने संकल्प किया ....

" **अब गुस्सा नहीं करेंगे** " ..... बहुत कम हो गया।

कईयों में ड्रिंकिंग की बहुत आदत थी। संकल्प कर लिया ....

" अब हम यह काम नहीं करेंगे " ....

कष्ट हुआ लेकिन छुट गया।

किसी ने संकल्प किया ....

" हम बूरे वचन मुख से नहीं बोलेंगे " ....

अटेन्शन होने लगा, और ठीक हो गये।

हम भी अपने जीवन को डिवाइन बनाने के लिए सुन्दर संकल्प अवश्य करे। और भट्टी के इस आखरी दिवस पर पाँच अभ्यास भी आपको मिल रहे है

.....

आत्मा के तेजस्वी स्वरुप को दिव्य नेत्र से बार-बार देखना .....

" मैं निराकार .. शिवबाबा के समान बहुत तेजस्वी आत्मा हूँ "

दुसरा .....

" मैं ब्रह्मा बाबा के समान बहुत तेजस्वी फरिश्ता हूँ "

बाबा को वतन में सामने देखे .. जैसे उनका तेजस्वी स्वरुप है .. फरिश्ता .. अंग अंग से किरणें फैल रही है चारों ओर .. पावरफूल आभामंडल है ..

" वैसा मैं भी हूँ "

तीसरा ....

" ज्ञान सूर्य शिवबाबा की किरणें निरन्तर मुझ पर पड़ रही है "

याद रखेंगे .. बाबा के बहुत सुन्दर महावाक्य ....

" ज्ञान सूर्य से शक्तिशाली किरणें लेकर संसार को देना .. यह तुम्हारा मुख्य कार्य है " .....

बाकी यह कार्य तो निमित्त मात्र है .. बाकी सेवायें एक तरफ .. यह सेवा सबसे पावरफूल .. पाल्ला इसका भारी होगा

तो मैं ज्ञान सूर्य हूँ .. ज्ञान सूर्य की किरणें मुझ पर पड़ रही है .. मैं ग्लोब के ऊपर हूँ .. और यह किरणें चारों ओर फैल रही है "

चौथा अभ्यास .. फ़ील करेंगे ..

" मैं आत्मा परमधाम में हूँ .. और ऊपर शिवबाबा है "

उसके दिव्य स्वरुप को निहारेंगे .. अपने स्वरुप को भी निहारेंगे ....

" मैं आत्मा परमधाम में हूँ .. ऊपर ज्ञान सूर्य .. सर्वशक्तिमान .. सृष्टि के बीजरूप है "

यहाँ से बाबा को देखेंगे .. गहराई से ध्यान दे .. बाबा के स्वरूप को विजुयालाइज करे .. ब्रेन को थोड़ा स्ट्रेन फ़ील होगा

" मैं भी परमधाम में हूँ और वहीं बाबा है ऊपर " .....

बहुत आनन्द होगा .. बहुत ही मज़ा आयेगा।

और पाचवी प्रैक्टिस होगी .....

*" **मैं पवित्रता का फरिश्ता हूँ** .. और बाबा से पवित्रता की गोल्डेन किरणों की रिमझिम मेरे ऊपर हो रही है .. मैं प्रकृति का मालिक हूँ .. यह पवित्र किरणें प्रकृति तक जा रही है "*

तो यह पाँच अभ्यास अपने अपने सुविधा अनुसार करते रहना। सवेरे भी और शाम को भी सारे के सारे करना।

और दिन में भी बींच बींच में एक एक करके करना। कि यह मुझे करना है।

तो सभी महान आत्मायें तपस्वी आत्माओं के लिए यही शुभ भावनायें है ..

भगवान स्वयं आकर हमें यह तपस्या सीखा रहे है दैवी राज पाने के लिए। तो सच्चे दिल से, सम्पूर्ण लगन से तपस्या करेंगे और इसको कन्टिन्यु करेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org